

भरत भाई, कपि से उरिन हम नहीं

भरत भाई, कपि से उरिन हम नहीं
कपि से उरिन हम नहीं
भरत भाई, कपि से उरिन हम नहीं

सौ योजन, मर्याद समुद्र की
ये कूदी गयो छन माहीं।
लंका जारी, सिया सुधि लायो
पर गर्व नहीं मन माहीं॥

कपि से उरिन हम नहीं
भरत भाई, कपि से उरिन हम नहीं

शक्तिबाण, लग्यो लछमन के
हाहा कार भयो दल माहीं।
धौलागिरी, कर धर ले आयो
भोर ना होने पाई॥

कपि से उरिन हम नहीं
भरत भाई, कपि से उरिन हम नहीं

अहिरावन की भुजा उखारी
पैठी गयो मठ माहीं।
जो भैया, हनुमत नहीं होते
मोहे, को लातो जग माहीं॥

कपि से उरिन हम नहीं
भरत भाई, कपि से उरिन हम नहीं

आज्ञा भंग, कबहुं नहिं कीन्हीं
जहाँ पठायु तहाँ जाई।
तुलसीदास, पवनसुत महिमा
प्रभु निज मुख करत बड़ाई॥

कपि से उरिन हम नहीं
भरत भाई, कपि से उरिन हम नहीं

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/2160/title/bharat-bhai-kapi-se-urin-hum-nahi>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |